SET-3

Series RLH

कोड नं.
Code No. 3/3

रोल नं.
Roll No. | | | | | | | |

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **15** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

संकलित परीक्षा – II
SUMMATIVE ASSESSMENT – II

हिन्दी
HINDI

(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे | *अधिकतम अंक : 90*

Time allowed : 3 hours | *Maximum Marks : 90*

निर्देश : *(i)* *इस प्रश्न-पत्र के **चार** खण्ड हैं – क, ख, ग और घ ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है ।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

विश्व स्वास्थ्य-संगठन के अध्ययनों और संयुक्त राष्ट्र की मानव-विकास रिपोर्टों ने भारत के बच्चों में कुपोषण की व्यापकता के साथ-साथ बाल मृत्यु-दर और मातृ मृत्यु-दर का ग्राफ़ काफ़ी ऊँचा रहने के तथ्य भी बार-बार ज़ाहिर किए हैं । यूनिसेफ की रिपोर्ट बताती है कि लड़कियों की दशा और भी ख़राब है ।

पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के बाद, बालिग़ होने से पहले लड़कियों को ब्याह देने के मामले दक्षिण एशिया में सबसे ज़्यादा भारत में होते हैं । मातृ मृत्यु-दर और शिशु मृत्यु-दर का एक प्रमुख कारण यह भी है । यह रिपोर्ट ऐसे समय जारी हुई है जब बच्चों के अधिकारों से संबंधित वैश्विक घोषणा-पत्र के पच्चीस साल पूरे हो रहे हैं । इस घोषणा-पत्र पर भारत और दक्षिण एशिया के अन्य देशों ने भी हस्ताक्षर किए थे । इसका यह असर ज़रूर हुआ कि बच्चों की सेहत, शिक्षा, सुरक्षा से संबंधित नए कानून बने, मंत्रालय या विभाग गठित हुए, संस्थाएँ और आयोग बने । घोषणा-पत्र से पहले की तुलना में कुछ सुधार भी दर्ज हुआ है । पर इसके बावजूद बहुत सारी बातें विचलित करने वाली हैं । मसलन, देश में हर साल लाखों बच्चे गुम हो जाते हैं । लाखों बच्चे अब भी स्कूलों से बाहर हैं । श्रम-शोषण के लिए विवश बच्चों की तादाद इससे भी अधिक है । वे स्कूल में पिटाई और घरेलू हिंसा के शिकार होते रहते हैं ।

परिवार के स्तर पर देखें तो संतान का मोह काफ़ी प्रबल दिखाई देगा, मगर दूसरी ओर, बच्चों के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता बहुत क्षीण है । कमज़ोर तबकों के बच्चों के प्रति तो बाक़ी समाज का रवैया अमूमन असहिष्णुता का ही रहता है । क्या ये स्वस्थ समाज के लक्षण हैं ?

(i) विभिन्न रिपोर्टों में क्या ***नहीं*** बताया गया है ?

(क) बच्चे घोर कुपोषण का शिकार हैं

(ख) बाल मृत्यु-दर और मातृ मृत्यु-दर भी काफ़ी ज़्यादा है

(ग) भारत की स्थिति अन्य देशों के मुक़ाबले अच्छी है

(घ) लड़कियों की दशा भी शोचनीय है

(ii) मातृ मृत्यु-दर और शिशु मृत्यु-दर अधिक होने का मुख्य कारण है

(क) लड़कियों का विवाह कच्ची उम्र में करवा देना

(ख) अधिकारों की जानकारी का अभाव

(ग) अधिक बच्चों का होना

(घ) माता-पिता का बच्चों पर ध्यान न देना

(iii) भारत ने जिस वैश्विक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए उसका क्या प्रभाव पड़ा ?

(क) केवल आयोग बनाए गए

(ख) बच्चों की सेहत, शिक्षा, सुरक्षा आदि के कानून बने

(ग) बच्चों को बेहतर सुरक्षा मिल गई

(घ) बाल मज़दूरी की घटनाएँ कम हुईं

(iv) आज भी भारत में बच्चों की स्थिति कैसी है ?

(क) सभी बच्चों को शिक्षा अवश्य दी जाती है

(ख) कोई बच्चा श्रम-शोषण के लिए विवश नहीं है

(ग) कोई भी बच्चा ग़ायब नहीं होता

(घ) विद्यालय और घर पर भी पिटाई होती है

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा

(क) वंचित बचपन

(ख) आजकल के बच्चे

(ग) यूनिसेफ़ की रिपोर्ट

(घ) लड़कियों की ख़राब दशा

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

चंपारण सत्याग्रह के बीच जो लोग गांधीजी के संपर्क में आए वे आगे चलकर देश के निर्माताओं में गिने गए । चंपारण में गांधीजी न सिर्फ सत्य और अहिंसा का सार्वजनिक हितों में प्रयोग कर रहे थे बल्कि हलुवा बनाने से लेकर सिल पर मसाला पीसने और चक्की चलाकर गेहूँ का आटा बनाने की कला भी उन बड़े वकीलों को सिखा रहे थे, जिन्हें ग़रीबों की अगुवाई की जिम्मेदारी सौंपी जानी थी । अपने इन आध्यात्मिक प्रयोगों के माध्यम से वे देश की ग़रीब जनता की सेवा करने और उनकी तक़दीर बदलने के साथ देश को आज़ाद कराने के लिए समर्पित व्यक्तियों की एक ऐसी जमात तैयार करना चाह रहे थे जो सत्याग्रह की भट्टी में उसी तरह तपकर निखरे, जिस तरह भट्टी में सोना तपकर निखरता और क़ीमती बनता है ।

गांधीजी की मान्यता थी कि एक प्रतिष्ठित वकील और हज़ामत बनाने वाले हज़्ज़ाम में पेशे के लिहाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं, दोनों की हैसियत एक ही है । उन्होंने पसीने की कमाई को सबसे अच्छी कमाई माना और शारीरिक श्रम को अहमियत देते हुए उसे उचित प्रतिष्ठा व सम्मान दिया था । कोई काम बड़ा नहीं, कोई काम छोटा नहीं, इस मान्यता को उन्होंने स्थापित करना चाहा । मर्यादाओं और मानव-मूल्यों को उन्होंने प्राथमिकता दी ताकि साधन शुद्धता की बुनियाद पर एक ठीक समाज खड़ा हो सके । आज़ाद हिन्दुस्तान आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और आत्म-सम्मानित देश के रूप में विश्व-बिरादरी के बीच अपनी एक ख़ास पहचान बनाए और फिर उसे बरक़रार भी रखे ।

(i) गांधीजी बड़े वकीलों को हलुवा बनाना और सिल पर मसाला पीसना क्यों सिखाना चाहते थे ?

  (क) वे ग़रीब जनता की सेवा करने में हिचकिचाएँगे नहीं

  (ख) आत्मनिर्भर बनने के लिए ज़रूरी था

  (ग) सार्वजनिक हित के लिए अति-आवश्यक था

  (घ) सत्याग्रह का अनोखा तरीक़ा था

(ii) गांधीजी आध्यात्मिक प्रयोग क्यों कर रहे थे ?

(क) आज़ादी के प्रति समर्पित लोगों का समूह तैयार करने के लिए

(ख) सोने को कुंदन बनाने के लिए

(ग) स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए

(घ) अंग्रेज़ी शासन को अपनी ताक़त दिखाने के लिए

(iii) व्यवसाय को लेकर गांधीजी के क्या विचार थे ?

(क) उन्होंने पसीने की कमाई को सबसे अच्छी कमाई माना

(ख) कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं, सभी पेशे एक-समान हैं

(ग) शारीरिक श्रम से ही आज़ादी मिलेगी

(घ) सब अपना-अपना काम ठीक से करें

(iv) गांधीजी ने अच्छे समाज के निर्माण के लिए महत्त्व दिया

(क) आत्मनिर्भरता को

(ख) मर्यादाओं और मानव-मूल्यों को

(ग) अहिंसा को

(घ) बुनियादी शिक्षा को

(v) आज़ाद हिन्दुस्तान आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और आत्म-सम्मानित बने – यह विचार प्रमाण था गांधीजी की

(क) देशभक्ति का

(ख) आध्यात्मिकता का

(ग) बहादुरी का

(घ) समझदारी का

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी;
वरना समता-संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी ?
छोड़ आसरा अलख शक्ति का; रे नर, स्वयं जगतपति तू है,
तू यदि जूठे पत्ते चाटे, तो मुझ पर लानत है, थू है !

कैसा बना रूप यह तेरा, घृणित, पतित, वीभत्स, भयंकर !
नहीं याद क्या तुझको, तू है चिर सुंदर, नवीन प्रलयंकर ?
भिक्षा-पात्र फेंक हाथों से, तेरे स्नायु बड़े बलशाली,
अभी उठेगा प्रलय नींद से, तनिक बजा तू अपनी ताली ।

ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मज़लूम, अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का; जाग, अरे निद्रा-सम्मोहित,
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे ।

भूखा देख तुझे गर उमड़े आँसू नयनों में जग-जन के
तो तू कह दे : नहीं चाहिए हमको रोने वाले जनखे;
तेरी भूख, असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सकें क्रोधानल –
तो फिर समझूँगा कि हो गई सारी दुनिया कायर निर्बल ।

(i) कवि पहली दो पंक्तियों में किस समस्या की ओर संकेत करता है ?

(क) अशिक्षा की

(ख) ऊँच-नीच और असमानता की

(ग) जनसंख्या की

(घ) सांप्रदायिक भेदभाव की

(ii) 'छोड़ आसरा अलख शक्ति का; रे नर, स्वयं जगतपति तू है' – इस पंक्ति में कवि मानव को क्या प्रेरणा देता है ?

(क) भाग्य पर नहीं कर्म पर विश्वास करना चाहिए

(ख) आत्मनिर्भर बनना ज़रूरी है

(ग) जूठे पत्ते नहीं चाटने चाहिए

(घ) दूसरों का आश्रय छोड़ देना चाहिए

(iii) 'मनुष्य को अपने असीमित बल को पहचानना चाहिए' – यह किस पंक्ति का भाव है ?

(क) अभी उठेगा प्रलय नींद से, तनिक बजा तू अपनी ताली

(ख) प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे

(ग) तू अखंड भंडार शक्ति का; जाग, अरे निद्रा-सम्मोहित

(घ) तेरी भूख, असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सकें क्रोधानल –

(iv) 'अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे' – पंक्ति का भाव है

(क) हमें अपनी शक्ति को पहचानना चाहिए

(ख) भिक्षा-पात्र फेंक अपने सामर्थ्य को पहचानना चाहिए

(ग) किसी के आगे गिड़गिड़ाना नहीं चाहिए

(घ) दुर्व्यवहार के प्रति आवाज़ उठानी चाहिए

(v) कवि दुनिया को कब 'कायर' और 'निर्बल' समझता है ?

(क) जब ग़रीबी, भूख और लाचारी पर क्रोध नहीं आता

(ख) जब भूखे को देख दुनिया की आँखें नहीं भरती

(ग) जब जूठे पत्ते चाटते हुए भिखारी को देखकर भी दुनिया अनदेखा करती है

(घ) जब हाथ पसारे बच्चों को देखकर दुनिया का मन नहीं पसीजता

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

ओ महमूदा मेरी दिल जिगरी
तेरे साथ मैं भी छत पर खड़ी हूँ
तुम्हारी रसोई तुम्हारी बैठक और गाय-घर में
पानी घुस आया
उसमें तैर रहा है घर का सामान
तेरे बाहर के बाग का सेब का दरख्त
टूट कर पानी के साथ बह रहा है
अगले साल इसमें पहली बार सेब लगने थे
तेरी बल खाकर जाती कश्मीरी कढ़ाई वाली चप्पल
हुसैन की पेशावरी जूती
बह रहे हैं गंदले पानी के साथ
तेरी ढलवाँ छत पर बैठा है
घर के पिंजरे का तोता
वह फिर पिंजरे में आना चाहता है
महमूदा मेरी बहन
इसी पानी में बह रही है तेरी लाडली गऊ
इसका बछड़ा पता नहीं कहाँ है
तेरी गऊ के दूध भरे थन
अकड़ कर लोहा हो गए हैं
जम गया है दूध

सब तरफ पानी ही पानी
पूरा शहर डल झील हो गया है
महमूदा, मेरी महमूदा
मैं तेरे साथ खड़ी हूँ
मुझे यकीन है छत पर जरूर
कोई पानी की बोतल गिरेगी
कोई खाने का सामान या दूध की थैली
मैं कुरबान उन बच्चों की माँओं पर
जो बाढ़ में से निकलकर
बच्चों की तरह पीड़ितों को
सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रही हैं
महमूदा हम दोनों फिर खड़े होंगे
मैं तुम्हारी कमलिनी अपनी धरती पर...
उसे चूम लेंगे अपने सूखे होठों से
पानी की इस तबाही से फिर निकल आएगा
मेरा चाँद जैसा जम्मू
मेरा फूल जैसा कश्मीर ।

(i) घर में पानी घुसने का कारण है

(क) नल और नाली की ख़राबी

(ख) बाँध का टूटना

(ग) प्राकृतिक आपदा

(घ) नदी में रुकावट

(ii) महमूदा की बहन को विश्वास नहीं है

(क) छत पर पानी की बोतल गिरेगी

(ख) कुछ खाने-पीने की सहायता पहुँचेगी

(ग) कोई हैलीकॉप्टर उन्हें बचाने छत पर आएगा

(घ) इस मुसीबत से निकल जाएँगे

(iii) 'मेरा चाँद जैसा जम्मू
मेरा फूल जैसा कश्मीर' का भावार्थ है

(क) जम्मू और कश्मीर में फिर से चाँद दिखने लगेगा

(ख) जम्मू और कश्मीर का सौंदर्य वापिस लौटेगा

(ग) जम्मू और कश्मीर स्वर्ग है

(घ) जम्मू और कश्मीर चाँद और फूल जैसा सुंदर है

(iv) कवयित्री माताओं पर क्यों न्यौछावर होना चाहती है ?

(क) दूसरों को बचाने के कार्य में जुटी हैं

(ख) बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रही हैं

(ग) स्वयं भूखी रहकर बच्चों की देखभाल करती हैं

(घ) रसद पहुँचाने का कार्य कर रही हैं

(v) पूरा शहर डल झील जैसा लग रहा है क्योंकि

(क) डल झील का फैलाव बढ़ गया है

(ख) पूरे शहर में पानी भर गया है

(ग) पूरे शहर में शिकारे चलने लगे हैं

(घ) झील में नगर का प्रतिबिंब झलक रहा है

खण्ड ख

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : *1×3=3*

(क) मान लीजिए कि पुराने ज़माने में भारत की एक स्त्री भी पढ़ी-लिखी न थी । (वाक्य-भेद लिखिए)

(ख) एक चिड़िया हमारी खिड़की पर डरी-डरी बैठी थी । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ग) झूरी के दोनों बैलों को गया के घर मजबूरन जाना पड़ा । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तित कीजिए : *1×4=4*

(क) माँ ने स्वादिष्ट भोजन बनाया । (कर्मवाच्य में)

(ख) यह दर्पण मुझसे गिर गया था । (कर्तृवाच्य में)

(ग) इतनी गर्मी में कौन सो सकता है ? (भाववाच्य में)

(घ) रातभर कैसे जागा जाएगा ? (कर्तृवाच्य में)

7. रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए : *1×4=4*

बालगोबिन भगत <u>कबीर के</u> गीतों को गाते <u>और</u> <u>उनके</u> आदेशों पर <u>चलते थे</u> ।

8. (क) निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए : *1×3=3*

(i) कहत, नटत, रीझत, खिझत
मिलत, खिलत, लजियात
भरे भवन में करत हैं
नैननि ही सौं बात ।

(ii) एक ओर अजगरहिं लखि एक ओर मृगराय ।
विकल बटोही बीच ही, पर्यो मूरछा खाय ।

(iii) एक मित्र बोले "लाला तुम किस चक्की का खाते हो ?
इतने महँगे राशन में भी, तुम तोंद बढ़ाए जाते हो ।"

(ख) वीर रस का स्थायी भाव क्या है ? *1*

खण्ड ग

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *2+2+1=5*

इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया । सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ । नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं । अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते ।

(क) मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति का उन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(ख) पहले इन्दौर में उनकी आर्थिक स्थिति कैसी रही होगी ?

(ग) मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की क्यों हो गया था ?

अथवा

पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है । पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता । हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किन्तु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है । रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था ।

(क) संस्कृत व्यक्ति की कौन-सी विशेषताएँ बताई गई हैं ?

(ख) रात के तारों को देखकर न सो सकने वाले मनीषी को प्रथम पुरस्कर्ता क्यों कहा गया है ?

(ग) पेट भरना या तन ढँकना मनुष्य की संस्कृति की जननी क्यों नहीं है ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×5=10*

(क) लेखक नाटकों में स्त्रियों की भाषा प्राकृत होने को उनकी अशिक्षा का प्रमाण नहीं मानता । इसके लिए वह क्या तर्क देता है ?

(ख) स्त्री-शिक्षा के विरोधी अपने पक्ष में क्या-क्या तर्क देते हैं ? दो का उल्लेख कीजिए ।

(ग) 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' लेखक की दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है । कैसे ?

(घ) बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों ? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है ?

(ङ) काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे ?

11. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *2+2+1=5*

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहि जान बिदित संसारा ।।
माता पितहि उरिन भये नीकें । गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें ।।
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा । दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा ।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली ।।

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया ?

(ख) यहाँ किस गुरु-ऋण की बात हो रही है उसे चुकाने के लिए लक्ष्मण ने परशुराम को क्या उपाय सुझाया ?

(ग) 'माता पितहि उरिन भये नीकें' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर ।

(क) 'राख जैसा' किसे कहा गया है और क्यों ?

(ख) 'तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ' – का भाव स्पष्ट कीजिए ।

(ग) 'उसका गला' में 'उसका' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×5=10*

(क) 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं ? 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?

(ख) 'क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर ?' – का क्या भाव है ?

(ग) 'कन्यादान' कविता में किसे दुख बाँचना नहीं आता था और क्यों ?

(घ) 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से कैसे भिन्न है ?

(ङ) माँ की सीख में समाज की कौन-सी कुरीतियों की ओर संकेत किया गया है ?

13. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी कई तरह से कठिनाइयों का मुकाबला करते हैं । सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन-मूल्यों को अपनाया जा सकता है ? चर्चा कीजिए । *5*

खण्ड घ

14. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए : *10*

(क) <u>प्रदूषण : समस्या और समाधान</u>

- प्रदूषण के प्रकार
- कारण और प्रभाव
- उपाय

(ख) <u>जीवन में खेलों का महत्त्व</u>

- खेलकूद का महत्त्व
- विद्वानों के विचार
- स्वास्थ्य, भाईचारे के लिए ज़रूरी

(ग) <u>भ्रष्टाचार से मुक्त होगा देश</u>

- बढ़ता भ्रष्टाचार
- मुक्ति के उपाय
- भ्रष्टाचार से मुक्त देश की कल्पना

15. अपने प्रिय मित्र को पत्र लिखकर धन्यवाद दीजिए कि आड़े वक्त में उसने किस तरह आपका साथ दिया था । *5*

16. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक लिखकर एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए : *5*

मधुर वचन सुनकर किसका हृदय प्रसन्न नहीं हो जाता । मधुर वचन मीठी औषधि के समान लगते हैं तो कड़वे वचन तीर के समान चुभते हैं । मधुर वचन वास्तव में औषधि के समान दुखी मन का उपचार करते हैं । मधुर वचन न केवल सुननेवाले अपितु बोलनेवाले को भी आत्मिक शांति प्रदान करते हैं । जो व्यक्ति मधुर वचन नहीं बोलते, वे अपनी ही वाणी का दुरुपयोग करते हैं । ऐसे व्यक्ति संसार में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा खो बैठते हैं तथा अपने जीवन को कष्टकारी बना लेते हैं । कड़वे वचनों से उनके बनते काम बिगड़ जाते हैं तथा वे प्रतिपल अपने विरोधियों व शत्रुओं को जन्म देते हैं । मुसीबत के समय लोग उनसे मुँह फेर लेते हैं । मधुर वचन से कोमलता, नम्रता तथा सहिष्णुता की भावना का जन्म होता है । इन गुणों से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखर उठता है । शांत व्यक्ति ही मधुर वचन बोल पाता है जबकि क्रोधी सदा दुर्वचन ही बोलता है । दुर्वचन समाज में ईर्ष्या, द्वेष, लड़ाई, वैमनस्य, निंदा आदि दुर्गुणों को जन्म देते हैं । मधुर वचन निश्चित रूप से संसार में प्रेम, भाईचारा तथा सुखों का संचार करते हैं । मानव को संसार की सुख-शांति के लिए वाणी को नियंत्रण में रखकर सदा ही उसका सदुपयोग करना चाहिए ।